संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक - ०१ ● ०१ जनवरी २०१६ पौष कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

उ०प्र० के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने किया यज्ञ

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

२३ दिसम्बर– आर्य समाज खानपुर मेरठ के प्रधान एवं गुरूकुल पूठ के उपाध्यक्ष श्री शोदान सिंह आर्य संयोजन में चौ० चरण सिंह जी पूर्व प्रधान मंत्री भारत सरकार के जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभामंत्री जी रहे। वेदपाठ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती अधिष्ठाता गुरूकुल पूठ ने किया। उ०प्र० के यशस्वी मुख्यमंत्री योग आदित्य नाथ जी मोदीनगर के निकट पतला ग्राम में आई.टी. आई. पतला के प्रांगण में चौ० चरण सिंह जी के जन्म दिव पर उनकी मूर्ति का अनावरण करने आये थे उन्होंने आकर वैदिक परम्परा से यज्ञ सम्पन्न किया और पूर्णाहुति के पश्चात् स्वामी जी (ब्रह्मा) जी से आशीर्वाद प्राप्त किया उनके साथ श्री सत्यपाल सिंह जी मानव संसाधन राज्य मंत्री भारत सरकार विधायक श्रीमती मंजू सिवाच, श्री विजयपाल सिंह तोमर सांसद, क्षेत्रीय नेता एवं भाषण हुआ चौ० चरण सिंह जी पक्के आर्य समाजी एवं वैदिक धर्म के प्रति समर्पित व्यक्तित्व थे उन्होंने सदैव गरीब–दलित वर्ग के हित में चिन्तन किया और उनका उत्थान किया वे आर्य समाज गाजियाबाद के मन्त्री एवं प्रधान भी रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० का इतिहास १९६२ में छपा हुआ है उसमें उनका परिचय चित्र सहित कृषि मंत्री उ०प्र० के रूप में दिया गया है। प्रधान मन्त्री बनने पर वे टंकारा तथा अजमेर महर्षि दयानन्द जी के जन्म स्थान एवं अन्तिम स्थान देखने गए थे। आर्य समाज के लिए सदैव वे हितचिन्तक रहे श्री योगी जी ने भी उन्हें कर्मयोगी बताया और उनके बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर श्रद्धांजली प्रदान की श्री योगेन्द्र पाल सिंह योगी की तपस्या सफल हुई। श्री शोदान सिंह आर्य ने स्वामी जी का परिचय देते हुए आर्य समाज की नींव के पत्थर के रूप में उनका सम्मान किया। १० हजार की भीड़ में शोदान सिंह आर्य के पौत्र विनय आर्य चिकारी को श्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में सम्मानित किया कार्यक्रम अतीव प्रभावशाली रहा। आर्य समाज के विद्वान एवं कार्यकर्त्ता भी उपस्थित रहे।

–प्रदीप शास्त्री गुरूकुल पूठ, संवाददाता

देश भक्त की सच्ची पुकार

–डॉ० धीरज सिंह, का.वा. सभा प्रधान

भारत देश विश्व के महान राष्ट्रों में गिना जाता है। यह भूलते जा रहे हैं कि जो सोने की चिड़िया के नाम से पुकारी जाती थी वह अब बेकारी *दरिद्रता के शाप में उलझी हुई है।*

स्वतंत्रता मिली, परन्तु जिस तीव्रता से ७२ सालों में विकास करना चाहिए था, वह कितना दूर प्रकट हो रहा है। न जाने ये देश फिर कब समृद्धिशाली तथा शांति प्राप्त करने के लिए कितने सौ साल लगायेगा, यह अनुभव करना असंभव है। देश में भाषणों और बहसबाजी का काम तेजी से चल रहा है और जब विकास का प्रश्न आता है तो रणनीति आपसी फूट में समय नष्ट करना प्रत्येक नेता का काम बन गया है। पर इनका कौन भागी है। हम स्वयं फूट डालकर राष्ट्र का पतन कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं कि हमारी प्राचीन संस्कृति के संस्कार भ्रातृ भाव प्रेम और अतिथि संस्कारों से प्रेरित रहे। परंतु यहां के जनसाधारण ने कभी मतभेद न समझकर शत्रुओं को पहचानने में देरी कर दी है। हमारे नागरिकों ने सबको यहां पर बसने दिया कि हम सब विश्व की एक संतान हैं तीन अक्षर का शब्द मेल हमारे रक्त में बसा हुआ है और रहेगा। हम मानव का उपकार करना जानते हैं। परन्तु इस नीति में यहां अधर्मियों का अखाड़ा बना दिया है क्या अशांति, धर्म का संघर्ष, सामाजिक व्यवस्था में खलबली। परन्तु आज पड़ोसी देश पाकिस्तान लो, बंगलादेश, अरब, पश्चिम के देश लो अमेरिका लो, सबकी एक ही चाल है कि किसी प्रकार भारत के टुकड़े करके इसकी प्राचीन सभ्यता का नाम नष्ट किया जाये। ये पड़ोसी देश अवसर प्राप्त करके अंदर में धन, विस्फोटक सामग्री भिजवाकर यहां के अपने अनुयायियों, जो मुसलमान हैं उनको मोहरा बनाकर उनके द्वारा

भारत में अशांति फैलाते जा रहे हैं। ये निरंतर वारदातों ने शासकों को अधमोढ कर दिया है। सदैव इन आतंकवादियों को रोकने में लगे रहते हैं जिसके कारण विकास के प्रयोजन देश में अधूरे रह जाते हैं। बेरोजगारी दरिद्रता बढ़ती जा रही हैं। शिक्षा का स्तर इतना गिर गया है कि बच्चों पर किताबों का बोझा लादा जा रहा है। शिक्षक अपना दायित्व भूल रहे हैं। इस कमी के कारण मीडिया रोज विस्तार में लिखती रहती है कि फलां विद्यार्थी ने इन किताबों के बोझ से आत्महत्या कर ली है और माता–पिता का बच्चों पर भी कोई ध्यान नहीं होता। क्योंकि उनकी सामाजिक व्यवस्था बिखरी हुई है। बच्चों

शेष पृष्ठ ४ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रेम की आग में द्वेष को जलाने वाली है आर्य समाज

महर्षि दयानन्द ने ऐसे आर्य समाज रूपी दीपक से समाज को प्रकाशित किया जब समाज में नारी प्रताड़ित थी। अविद्या रूपी अन्धकार का साम्राज्य फैला था छुआ छूत जन–जन में व्याप्त थी। मूर्ति पूजा ही प्रभु पूजा बन गयी थी। तब आर्य सामज रूपी आन्दोलन को चलाकर वेद ज्ञान को मानव निर्माण का मूल मंत्र घोषित किया। नारी को मातृशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।

ईश्वर की महिमा अपार है। गुरू विरजानन्द के आदेश को शिरोधार्य रख महर्षि दयानन्द ने वेदशास्त्रों का ज्ञान प्रकाशित करने के लिए अकेले ही वेदों का झण्डा फहराया उनका केवल दृढ़ विश्वास कि–वेदों का उपदेश ईश्वर प्रदत्त है, ये ऋषियों की रचना नहीं है। ये तो सब विद्याओं की पुस्तक हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्य सामज के रूप में एक आशा की किरण प्रकाशित कर समाज में परिवर्तन किया। वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का सन्देश घर–घर पहुंचाकर नवयुग का निर्माण किया। आर्य समाज की एक अलग छवि व पहचन बन गयी। उसके ललाट पर अंकित था नवीन भारत का निर्माता–आर्य समाज है

आर्य समाज को देखकर ही एण्डू जैक्सन डेविस ने कहा था–" आर्य सामज के रूप में मुझे एक आग दिखायी दे रही है जो कि सर्वत्र फैली हुई है अर्थात असीम प्रेम की आग जो द्वेष को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर शुद्ध कर रही है। जब यह प्रेमाग्नि इस सुन्दर पृथ्वी को नव–जीवन प्रदान करेगी तो सार्वत्रिक सुख, अभ्युदय और आनन्द का युग अर्थात नवयुग का निर्माण होगा।"

उनके ये शब्द आज अतीत बन चुके हैं महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना जिन उद्देश्यों से की थी उनमें शिथिलता आ गयी है ऐसा प्रतीत होता है मानो सूर्य अस्ताचल में डूबकर विलुप्त हो गया हो। आर्य समाज में जो जोश, ओज, गति व तेज दिखायी पड़ता था वह सब ठंडा पड़ गया है। आज का आर्य समाज न तो विजातीय तत्वों को भस्म करने वाली अग्नि रहा है न ही विद्वेष को राख बना देने वाली प्रेमाग्नि। जिस आनन्द व अभ्युदय अर्थात नवयुग का निर्माण महर्षि दयानन्द ने किया था वह सिमट कर वर्तमान में अवसरवादी नेतृत्व तक सीमित रह गया है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज के माध्यम से पृथ्वी को नवजीवन कैसे प्राप्त होगा?

वर्तमान में आर्य समाज की स्थिति शरशैय्या पर पड़े भीष्म पितामह जैसी है जो अपने भीतर गौरवशाली इतिहास को लपेटे हुए तो है लेकिन तरकस में विजय श्री दिलाने वाला एक भी बाण शेष नहीं बचा है। यह विचारणीय विषय है कि सदियों के बाद आर्य माता को जो सपूत मिला था उसके असामयिक निर्वाण से वर्तमान में हमें अनेक उतार चढ़ाव देखने पड़ रहे हैं। उनकी नवभारत निर्माण की संकल्पना धूमिल होती नजर आ रही है।

अब समय आ गया है विचार करने का आज पुनः हमें एक संकल्प लेना होगा आखिर जिस दिन हमारा युग निर्माता ऋषिवर बलिदान हो गया। समाज में लगातार बढ़ते जा रहे पाखण्ड अन्धविश्वास जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, शोषण एवं अन्याय को समाप्त करने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए।

– सम्पादक

–: विनय :–

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

ऋ.१.५०.१०। अ.७.५.५३।

भावार्थ- हमें ऊपर-ऊपर, अधिक-अधिक प्रकाश में उठना है। इस अन्धकारमय अवस्था से निकल परमज्योति तक पहुँचना है। हमें अपनी यह वर्तमान अवस्था अन्धकारमय इसलिये नहीं प्रतीत होती है चूंकि हमें इसके अतिरिक्त अभी और किसी प्रकाश का पता नहीं है। यदि हमें इसमे अगला ही प्रकाश दीखने लगे तो कम से कम इस वर्तमान अन्धेरी दशा से बाहर निकलने को हमारा जी अवश्य छटपटाने लगे। हाँ, उस अन्तिम ज्योति एक वेशक हम धीरे-धीरे ही पहुंचेगें।

एकदम उस चकाचौंध करने वाले महाप्रकाश के दृष्टिगोचर हो जाने पर तो शायद हमारी अनभ्यस्त निर्बल दृष्टि अन्धी हो जाय या हम पगला जायें। अतः हमें क्रमशः एक के बार एक उच्चतर प्रकाश को देखते हुये ऊपर जाना होगा। हम इस तामसिक दशा को छोड़ राजसिक अवस्थाओं से गुजरते हुये सत्व के प्रकाश में पहुंचेंगे। इस जड़ (नास्तिकता) वाद और भोगवाद के अन्धकार से उठ देववाद और यज्ञवाद् के विविध प्रकाशों को देखते हुए उस सर्वोच्च प्रकाश में जा पहुंचेंगे जहाँ एकेश्वरवाद और सर्वोदयवाद का अखण्ड राज्य है। जड़ता, स्थूलता के पाथिव अन्धकार से उठ कर सूर्य ही को पा लेगें जिसकी ज्योतिर्मय किरणों से अन्य सब लोक प्रकाश पा रहे हैं।

हे प्रभो! हम पर ऐसी कृपा करो कि हम इस अन्धकारमय प्रकृति-प्रस्त अवस्था से उठकर नाना देवों को दिखलाने वाली अपनी आत्मिक ज्योति को विविध प्रकार से देखते हुये अन्त में तुम्हारी उस परमात्म-ज्योति को पा लेवें जिसमें कि तुम सब देवों के देव और सब ब्रह्माण्ड के प्रेरक महान् सूर्य होकर अपने अनन्त, अपार, अखण्ड प्रकाश में सदैव जगमगा रहे हो, सदैव देदीप्यमान हो रहे हो।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

135-वाँ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक–19, 20 जनवरी, 2019 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार

(तिथि–पौष शुक्ल त्रयोदशी एवं चर्तुदशी) सम्वत्–2075

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण-5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

समस्त पदाधिकारी/अन्तरंग सदस्य/प्रतिनिधि/आर्य बन्धुओं/बहिनों,

निवेदन के साथ सूचित करना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 19, 20 जनवरी,2019 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः 08.00 बजे से सायं 06.00 बजे तक संस्था प्रधान/का0प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला उप सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे जा हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में कार्यवाहक प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/– प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/–

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/– वार्षिक

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/– इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/– अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/– के हिंसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/– दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/– आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/– भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–25 दिसम्बर, 2018 तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। **बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ** के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वाषिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं। सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः–

दिनांक 19–01–2019 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल 8.00 बजे	–	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल 10.00 बजे	–	ध्वजारोहण– माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल 11.00 बजे	–	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।

1 बजे से ऋषि लंगर

द्वितीय सत्र

अपराह्न	02.00 बजे से	–	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल	6.00 बजे	–	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल	7.00 से 9.00	–	सामाजिक कुरीतियॉं, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल (मद्यनिषेध/ नशाबंदी / दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि	9.00 बजे	–	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिवस दिनांक 20–01–2019 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल 8.00 से 9.00 बजे तक	–	राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
पूर्वाह्न 11.00 बजे से	–	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
"	–	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
"	–	वार्षिक वृत्तांत एवं आय–व्यय का लेखा प्रस्तुत।
"	–	अनुमानित आय–व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
दोपहर 1.00 बजे	–	ऋषि लंगर

चतुर्थ सत्र

दोपहर 01.30 बजे से	–	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
अपराह्न 2.00 बजे से	–	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं 4.00 बजे	–	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)	(डॉ0 धीरज सिंह)	(अरविन्द कुमार)
मन्त्री	प्रधान	कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।	आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।	आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

निवेदक

सर्व श्री- ज्ञानेन्द्र गाँधी-उपप्रधान, **श्रीमती सुदेश आर्या**-उपप्रधान, **वीरेन्द्र रत्नम**-उपप्रधान, **राजीव रंजन मिश्र**-उप प्रधान, **मनमोहन तिवारी**-उप प्रधान, **डॉ० विशाल सिंह**-उपमंत्री, **सुनील कुमार**-उपमंत्री, **ज्ञानेन्द्र सिंह**-उपमंत्री, **रूद्र पाल आर्य**-उपमंत्री, **रमाशंकार आर्य**-पुस्तकाध्यक्ष, **तेजपाल सिंह**-सहपुस्तकाध्यक्ष, **डॉ० भानुप्रकाश आर्य, दयाशंकार आर्य, बेचन सिंह**-प्रतिष्ठित सदस्य। **अशोक कुमार आर्य, अजय श्रीवास्तव, संतोष कुमार मिश्र, श्रीमती नीलम ढींगरा, श्रीमती अमिता आर्या**-सहयुक्त सदस्य।

धरोहर

आर्य समाज के ओजस्वी प्रखर वक्ता–

पं. प्रकाशवीर शास्त्री पूर्व सांसद

आयेंगे खत अरब से जिसमें लिखा यह होगा।
गुरूकुल के ब्रह्मचारी हलचल मचा रहे हैं।

बचपन में आर्य समाज के उपदेशकों द्वारा यह वाक्य बोलते हुए सुनता तो मन में विचार आता कि यह हलचल कैसी मचा रहा है, गुरूकुल के ब्रह्मचारी को विशेष व्यायाम प्रदर्शन करना पड़ता है विशेष उत्साह आता है जिधर निकल जाये लोग उसके दर्शनों के लिए लालायित हो जाये तो समझो कोई ब्रह्मचारी आया है। पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी का नाम भी ऐसे ही दर्शनीय लोगों में रहा है जिनके दर्शन करने एवं उनका भाषण सुनने के लिए लोगों की भीड़ स्वतः हजारों की संख्या में जुट जाती थी। सर्वप्रथम उनके दर्शनों का सौभाग्य मुझे ३ नवम्बर १९६६ को मिला जब गुरूकुल ततारपुर के छात्रवास कक्षों का उद्घाटन था। मेरा कार्य पानी पिलाने के लिए था मुख्य द्वार के पास जो भी अतिथि आते उन्हें नमस्ते करने और जल पीने की प्रार्थना भी करते तभी शास्त्री जी आये उन्हें भी अभिवादन करके पानी पिलाया। उन्होंने नाम पूछा और बोले ब्रह्मचारी जी क्या पढ़ते हों? मैंने कहा संस्कारित। इतना सुनकर मुस्कराते हुए मंच की ओर चले गये। मैंने सोचा कोई गलती हो गयी है उनके मुस्कराने का तरीका यही था और जब अपना भाषण प्रारम्भ किया तो वही से कि अभी–अभी मैं गुरूकुल के मुख्य द्वार पर एक ब्रह्मचारी से पूछ रहा था कि क्या पढ़ते हो उसने संस्कृत न कहकर संस्कारित कहा मुझे अच्छा लगा उसके उच्चारण की बात नहीं है, उसकी भावना उत्साह और बाल स्वभाव से मुझे लगा कि ये ब्रह्मचारी आगे चलकर आर्य सामज के कार्यकर्ता बनेंगे, अधिकारी बनेंगे महर्षि दयानन्द के विचारों को देश–विदेश में पहुंचायेंगे और उस समय अपना भाषण देते हुए कहा था– आयेंगे खत अरब से...। यह उनके भाषण देने का प्रभावशाली स्वरूप था। हापुड़ आर्य समाज के वार्षिक सम्मेलन में आये। भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा कि अभी मैं गढ़मुक्तेश्वर से आ रहा हूं, रास्ते में एक वृद्धा मां ने मुझे रोककर आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटा जब तुम दिल्ली एम.पी. बनकर जाओ तो अन्न मंहगा हो गया है इसे सस्ता करवा देना। आज जनमानस त्रस्त है, भूखा है, अभावों में जी रहा है और हमारी सरकार इस पर ध्यान नहीं दे रही हैं। मैंने माता जी को आश्वासन दिया है आपकी बात जाकर उनका मोहन मंत्र जो सीधा हृदय पर प्रभावशाली होता था उन दिनों चुनाव का दौर चल रहा था अतः स्थान स्थान पर भाषण देने जाते थे। मा. बेगराज जी सहित अनेकों उपदेशक कार्यक्रमानुसार आगे जाकर भूमिका तैयार करते थे और आप भाषण द्वारा जनता को सम्बोधित करते थे। इस प्रकार थोड़े ही खर्च में बिना किसी पार्टी के निर्दलीय रूप में सांसद बनकर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया करते थे और संसद भवन में अपनी बात का प्रस्तुतिकरण सुन्दर ढंग से करते थे। वाणी का जादूगर आपको कहा जाता था। एक बार समाजवादी नेता श्री राम मनोहर लोहिया ने आपके विषय में किसी बात पर कह दिया था कि ये अकेला चना क्या भाड़ फोड़ देगा? तभी आपने उसका उत्तर देते हुए कहा था कि यह तो जरूर है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता लेकिन यदि वह तिरछा होकर छिटक जायें तो भड़भूजे की आंख जरूर फोड़ देगा।

इस वाक्य ने ही आपको इतनी प्रसिद्धि दिलाई कि दूसरे सांसद चाहे पक्ष के हो या विपक्षी सभी चुपचाप आपका भाषण सुनते थे किसी की हिम्मत कटाक्ष करने की नहीं होती थी। आज के परिवेश में यदि होते तो तुलनात्मक दृष्टि से वे सर्वोपरि सांसद के रूप में प्रतिष्ठित होते। सुना है जिस दिन आप संसद में भाषण देते थे उस दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी भी बैठकर आपका भाषण सुनते थे। आपकी वक्तृव्य कला परिमार्जित भाषा एवं नपे तुले शब्दों में होती थी, आंकड़े होते थे। आपके भाषण और वक्तव्यों का प्रकाशन हो चुका है उनमें आप पढ़कर पूर्णरूपेण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं जो चर्चित है– गो हत्या या राष्ट्र हत्या, कश्मीर समस्या एवं समाधान, मेरे सपनों का भारत, आदि आदि है। आपका सुन्दर मुख मण्डल सौन्दर्य युक्त मुस्कान, आकर्षक नेत्र, आकर्षक व्यक्तित्व, लम्बा शरीर, धोती कुर्ता एवं कंधे पर पट्टी नुमा तौलिया अथवा लोई डालकर चलने का अभ्यास प्रायः बना हुआ था। मा. बेगराज जी आर्य भजनोपदेशक आपके साथ रहने के संस्मरण सुनाया करते थे। एक दिन की घटना सुनाते हुए बताया कि चुनाव के समय गढ़ क्षेत्र में एक ग्राम पलवड़ा सम्पर्क हेतु आये थे ग्राम से निकलते हुए उत्तर दिशा में वाल्मिकी लोगों की अधिकता है उनके द्वारा पोषित शूकर (सुअर) का एक बच्चा फिएट गाड़ी के नीचे आ गया और मर गया। बच्चे की चित्कार से आस पास के सभी मोल्लेवासी वाल्मिकी लट्ठ लेकर आ गये और गाड़ी को घेर लिया। मा. बेगराज जी घबरा गये बोले शास्त्री जी आज तो मामला भयानक है यहां से सुरक्षित नहीं जा सकेंगे। पुलिस व्यवस्था भी साथ नहीं थी। एक बार उन लोगों को देखकर सभी सहम गये। हमारी हिम्मत बाहर निकलने की नहीं थी तभी प्रभु ने उन्हें शक्ति दी और वे बाहर निकले, उनके क्रोधित एवं रौद्र रूप के सामने मुस्कान युक्त मुख मण्डल से बोले–मैं प्रकाशवीर शास्त्री आपके क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा हूं शेर मेरा चुनाव चिन्ह है और आपके आशीर्वाद की मुझे आवश्यकता है। मुझे बड़ा दुख है कि ड्राइवर की भूल से यह बच्चा मर गया और फिर आपको तो मारना ही था मारकर खाने की आपकी परम्परा जो है चलो मारना नहीं पड़ा शायद प्रभु की यही इच्छा हो और जेब से पांच रूपये का नोट निकालकर देते हुए कहा लो मिर्च मसाला जो आता है मंगा लेना ठीक है? ऐसा कहकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की और गाड़ी में बैठकर बोले चलो भाई, गाड़ी चलाओ। किसी व्यक्ति के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। थोड़ी दूर चलकर मैंने ही अपना मौन तोड़ते हुए कहा शास्त्री जी आज तो प्रभु की कृपा तो है ही साथ में महर्षि दयानन्द जी की भी तो कृपा है अतः दोगुनी कृपा का ही परिणाम हैं और फिर गुरूओं का भी आशीर्वाद है जो आप जैसे सहयोगी मिल रहे हैं। इस घटना को आज के संदर्भ में सोचा जाये तो कितना परिवर्तन आ चुका है चुनाव प्रचार का खर्च, अपना व्यक्तिगत खर्च, दिखावा और भीड़ के साथ चलकर प्रभावित करने का तरीका, सभी कुछ तो बदल गया है। तत्कालीन पांच रूपये का मूल्य भी पर्याप्त था लेकिन मुआवजा जैसी वस्तु के लिए लोग जाम लगाते हैं धरने और प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार के वाह्य आडम्बरों से भी शास्त्री जी सदैव पृथक रहे और अपनी पहचान " अकेला चलो रे" के रूप में बनाई।

गुरूकुल ततारपुर के वार्षिक सम्मेलन और स्थापना दिवस पर प्रायः प्रतिवर्ष आते ही रहते थे और आस–पास के ग्रामों के लोग उनका भाषण सुनने के लिए अवश्मेव आते थे। आपके बोलने की शैली सुमधुर थी। एक बार आहार निद्राभय मैथुनच्च...) इस श्लोक पर लगभग १ घंटा भाषण देकर बताया कि जिस समय पर श्लोक लिखा गया उस समय यह समानता रही होगी लेकिन यदि आज वे आकर दुनियां और समाज को देखें तो उन्हें यह श्लोक बदलना पड़ेगा जिसके फलस्वरूप मनुष्य इन चारों में पशु से भी नीचा हो गया है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

धर्म की चर्चा करना अब मनुष्यों के लिए नहीं केवल देवताओं के लिए सुरक्षित हो गया है और वह भी समाज में कई प्रकार से विभाजित होकर धर्म के नाम पर जनता को दिग्भ्रमित कर रहा है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग के अतिरिक्त दुनिया में कहीं भी सुख और आनन्द नहीं है। लोगों ने पूरा भाषण पूरी तन्मयता से सुना और शान्त मन से घरों को जाते हुए उनकी प्रशंसा कर रहे थे। पूरा आर्य जगत आपकी सुमधुर भाषण शैली से प्रभावित हो रहा था। गढ़मुक्तेश्वर के गंगा मेले पर शास्त्री जी प्रतिवर्ष आकर आर्य समाज कैम्प सेंटर–१ में अपना सम्बोधन करते थे। हम भी प्रायः गुरूकुल की ओर कभी यज्ञ हेतु कभी सेवा कार्य हेतु जाते थे। एक बार आपने जो भाषण दिया था वह आज भी प्रासंगिक है– रात्रि कालीन सभा में भारी भीड़ थी, आप भारत वर्ष की प्रशंसा और गरिमा का वर्णन करते हुए फिर अचानक वाणी में उग्रता आई और बोले कि माना यदि देश के मुसलमानों से कहा जाये कि आप भारत देश से बाहर चले जाओ और दुनिया के मुस्लिम देशों में जाकर बस जायेंगे और ईसाईयों से कहा जाये तो भी दुनिया में ईसाई देश है वहां जाकर शरण ले लेंगे फिर यदि हिन्दुओं से कहा जाये कि आप भारत छोड़कर कही भी अन्यत्र चले जाओं तो मुझे बताओ दुनिया के किस देश में जाकर शरण प्राप्त करेंगे? पूरी दुनिया में मात्र नेपाल ही हिन्दू राष्ट्र है। उसकी भी क्षमता उतनी नहीं है। थोड़ी देर शान्त रहकर फिर पूछा बताओ गंगा स्नान करने वाले हिन्दू लोगों तुम्हारे पास कोई समाधान हैं? फिर अचानक बोले हां मुझे २ जगह तो दिखाई देती है– भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर। इसके अलावा दुनिया में हिन्दुओं के लिए कोई जगह नहीं है। वर्ष १९९९–७० के लगभग की बात है उन्होंने महात्मा गांधी की अहिंसा की व्याख्या की और बोले आज महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त को अपनाने की आवश्यकता है अतः जब यहां से जाओ आठ आने की एक लाठी जरूर ले जाना और उस पर तेल लगाते रहना, उसको चलाने का अभ्यास करते रहना इससे आपका अभ्यास आपको सदैव स्वस्थ और सुरक्षित रखेगा और जब इसकी आवश्यकता पड़ेगी मुझे याद कर लेना इतना कहने पर जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया था। यह थी दूरदर्शी बुद्धि। आज ४०–४५ वर्षों बाद भी उनका वाक्य प्रासंगिक लग रहा है। पूरे देश की स्थिति का अवलोकन करें आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती के बिना किसी भी समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। गुरूकुलीय शिक्षा एवं संस्कारों से पोषित होकर जब शास्त्री जी स्नातक हुए तब दीक्षान्त समय में संकल्प लिया था कि अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति सभ्यता और संस्कृत भाषा का प्रचार–प्रसार करेंगे, इसी के लिए समर्पित रहें। संसद सदस्य रहते हुए आप आर्य समाज का प्रचार प्रसार पूर्ववत् किया। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का अध्यक्ष पद स्वीकार किया और आर्य महासम्मेलनों की परम्परा स्थापित की। शताब्दी से पहले मेरठ– कानपुर–वाराणसी में सम्मेलन करके दिल्ली में शताब्दी का आयोजन किया। उनकी स्मृतियां बार–बार आकर प्रेरणा प्रदान करती हैं। हम भी उनकी ९५वीं जयन्ती पर मैं अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। ईश्वर हमें शक्ति प्रदान करे कि हम सब उनके अधूरे कार्यों को पूरा करते हुए अपने समय का सदुपयोग करेंगे।

धर्मो रक्षति रक्षितः

– महन्त अवेद्यनाथ, संत शिरोमणि

परमात्मा को साक्षात् धर्मविग्रह कहा गया है। इसलिए यह वेदसम्मत और लोकसम्मत मत है कि सत्यदृष्टा हमारे ऋषियों ने अपनी स्मृतियों को पुण्याचरण, धर्माचरण से अभिमन्त्रित कर धर्म की मर्यादा अथवा गरिमा का संरक्षण किया। जिस तरह परमात्मा सनातन है, उसी तरह हमारा धर्म सनातन धर्म है। हमारा धर्म अव्यय, अविनाशी, सत्य, शाश्वत तथा नित्य है। धर्म का सही रूप से पालन करने वाला मनुष्य देवकोटि में प्रतिष्ठित होता है। धर्म का उद्देश्य मानव–जीवन का कल्याण करना ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लोगों को एक सूत्र में बांधना है। यह धर्मसापेक्षता ही धर्मनिरपेक्षता का सद्भाव है। हमारे धर्मशास्त्र का उद्घोष है कि यदि धर्म की रक्षा की जाती है, तो धर्म रक्षक की रक्षा करता है, धर्म भाव का नाश करने पर नष्ट धर्म महान् विनाशकारी होता है–

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षिति रक्षितः।।

(मनु० ८/१५)

हमारे धर्माचार्यों और मठाधीशों का यह कर्त्तव्य है कि हिन्दुओं को एकसूत्र में बाँधकर हिन्दूधर्म भारतीय सनातन धर्म की सर्व कल्याणकारी गरिमा से राष्ट्र की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता का संरक्षण कर समस्त विश्व को धर्म का वास्तविक बोध प्रदान कर सह अस्तित्व, पारस्परिक सहिष्णुता को धर्म भावना से भावित कर विश्व में शान्ति स्थापित करें। ऐसा करने से ही हमारे सनातन धर्म की रक्षा हो सकती है। बिना धर्म वा धर्माचरण के जीवनयापन व्यर्थ है। प्रत्येक व्यक्ति धर्म के विषय में जितना जानता है, उसका अपने जीवन में सदुपयोग करना चाहिए, सम्प्रयोग करना चाहिए।

धर्म की व्यवस्था न केवल मुक्तिलाभ के लिए, अपितु समाज को संगठित एवं अनुशासित करने के लिए ही की गयी थी। धर्म का लक्षण जोड़ना है, तोड़ना नहीं। यदि धर्म से हिन्दू जाति कमजोर होती है, तो वह धर्म हमारा धर्म नहीं है, उसमें सुधार करना होगा। रूढ़िवादी संकीर्ण विचारों को छोड़कर उदार एवं व्यापक दृष्टि अपनानी पड़ेगी, अन्यथा आज का बहुसंख्यक हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेगा। वैदिक वर्ण–व्यवस्था में यदि शूद्र को पाद से उपमेय किया गया है (परमात्मा के विराट स्वरूप निर्वचन में) तो हमें समझना चाहिए कि मनुष्य का सिर पैर की ओर ही झुकता है। पैर के बिना मनुष्य खड़ा भी नहीं रह सकता है।

हमारे अविवेक के कारण कुछ लोग धर्म–परिवर्तन का कुचक्र चलाते हैं। धर्मशास्त्रों में कहीं भी छूतछात ही चर्चा नहीं है। आज होता है हमारा यह शरीर इस भवसागर का बेड़ा है। चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद हमें यह आत्मोद्धार के लिए मिला है, लेकिन जन्म–जन्मान्तर के कर्म विपाक और संस्कारगत जीव की गति अन्धे के मसान होती है, जो एक कोठरी में घूम रहा है। उपदेश के उसे बाहर निकलने का रास्ता बता दिया है कि दीवार पर हाथ लगाए चारों तरफ घूम जाओ, जहाँ अवकाश मिले, दरवाजा होगा, उससे बाहर निकल जाओ। किन्तु यह उस अन्धे का दुर्भाग्य है, प्रारब्ध का वैचित्र्य है, कमरे में घूमा हुआ जब वह दीवार के पास पास पहुंचता है, उसके सिर में खुजली होती है और वह दीवार से हाथ हटाकर दरवाजे से आगे निकल जाता है। इस प्रकार मुक्ति से वंचित गति है।

बड़े भटकाव के बाद यह शरीर मिला है। हमें यह अवसर व्यर्थ नहीं खोना चाहिये अन्यथा फिर चौरासी लाख योनियों का चक्कर होगा। सब धर्माचार्यों ने, सब शास्त्रों ने भवरोग की महौषधि के रूप में इस धर्म का जो उपदेश दिया है, जो दर्शन दिया है, उसका आचरण कर हमें इस लोक में अभ्युदय और परलोक में निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिये। हमारे देश के प्रबुद्ध मनीषियों ने शरीर प्राप्ति को धर्माचरण का साधन कहा है– "शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्" और दर्शन को निःश्रेयस आधिदैविक, आधिभौतिक और आधिदैहिक दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति का सोपान कहा है। धर्म और दर्शन के शिवात्मक कल्याण स्वरूप के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध का प्रत्यक्षीकरण ही हमारी भारतीय संस्कृति की गरिमा है, जो निःसन्देह सद्धर्माचरण प्रधान है।

हिन्दूसमाज का धार्मिक दृष्टिकोण सदा उदार है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' उसका सदा आदेश रहा है। हमने वेद द्वारा मर्यादित पवित्र आचार–विचारों से मानवों को सद्धर्म का दृष्टिकोण दिया है। हमारी धर्म–भावना में वर्ण–विद्वेष का सर्वथा अभाव है और विश्व की समग्र मानवता ने हमसे जीवन–यापन की सत्प्रेरणा ली है। महर्षि मनु का कथन है–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा।।

हमारी स्वतन्त्रता और अस्मिता राष्ट्र की अखण्डता पर टिकी है। यदि हमारे अन्दर धर्म सद्भाव, सामाजिक एकता नहीं होगी, तो हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ जायेगी। अतीत काल में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत हमारी सम्पूर्ण धार्मिक–आध्यात्मिक चेतनामयी अभ्युदय निःश्रेयस साधिका विजजिनी संस्कृति, धर्म सद्भावना भावित रहन–सहन विविधतायें एकता उत्पन्न करते हुए राष्ट्र को गति प्रदान करती थीं।

वर्तमान में भी एकता के कृत्रिम उपायों विजातीय सोच–विचार को, तौर–तरीकों को छोड़कर इन्हीं आजमाये नुस्खों को अपनाना होगा। राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दूधर्म हिन्दुत्व ही वह आधार भूमि तैयार करता है, जिसमें सर्व धर्म समभाव, एकात्मता, साम्प्रदायिक, धार्मिक सहिष्णुता, उदार–उदात्त वरेण्य वृत्तियों का सद्भाव सम्भव है।

पृष्ठ १ का शेष

देश भक्त की सच्ची पुकार

पर दमन नहीं। बच्चे असामाजिक नाशक व्यक्तियों से जुड़ जाते हैं। फिर ये आतंकवादी इन्हें पाकिस्तान या अन्य मुसलमान देशों में भेजकर भारत को नष्ट करने की गतिविधियां सिखाकर भारत में तोड़फोड़ करता हैं आज अयोध्या लो संगम, गोरखपुर, हैदराबाद, मुंबई, दिल्ली या कोई भी स्थान लो, सब अतांकवादियों के अड्डे बन चुके हैं। मस्जिदों में बाहर से पाकिस्तान या अन्य अरब देश पैसे से सहायता करते रहते हैं कि इस्लाम धर्म फैले बल्कि मदरसों को खोलकर हिंदुओं के विरूद्ध चाल चलकर देश में अशांति बनाने का काम करते हैं ये क्या धर्म शिक्षा का पठन है या भारत को तोड़ना है।

जहाँ शासकों, राजनैतिक पार्टियों का प्रश्न उठता है, वह तो कुर्सी बचाने के लिए नई फूट की गतिविधियां पैदा करना है। कभी महोदय मंत्री जी अलीगढ़ विद्यालय को सुरक्षा देकर उन्हें सर सैयद अहमद खां और मोहम्मद अली जिन्ना की तरह अलग धर्म के नाम पर राज्य खड़ा कर एक नया पाकिस्तान बनाने का मार्ग दिखा रहे थे। ऐसे शत्रु देश की गरीबी क्या मिटा सकेंगे, केवल अपनी कुर्सी बचाकर पृथ्वीराज की तरह देश का पतन करने में नये जयचंद पैदा करने में गलत नीतियां फैलाने की गतिविधयां पैदा कर रहे हैं। अरे ये नई नीतियां क्या करेंगी, इतने वर्ष हो गये न अयोध्या की समस्या मिलकर सुलझा सके, न देश की गरीबी, पर रोज नये संकट देश को बंटवारा करने की चालें फैला रहे हैं। दक्षिण में माननीय करूणानिधि को क्या सूझा। उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण को बांटने के लिए रामसेतु की समस्या खड़ी कर दी है। यदि जायज है। तो बैठकर हल करो न कि कुर्सी बचाने के लिए एकता को मिटा दो। आज एक नया रोग नेताओं में उत्पन्न हो रहा है, वह वोट बैंक देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, हिन्दू मुसलमानों में आपसी अनुपात बहुत थोड़ा अंतर रह गया। पर ये धर्म के शोषक गदर मचा रहे हैं। मुसलमानों को अधिक बच्चे पैदा करने पर कोई रुकावट नहीं जिसके कारण देश में गरीबी बढ़ती जा रही है। हिन्दूओं का परिवार नियोजन को रहस्य सिखाया जाता है। हज के लिए धन कहां है, सिख, बुद्ध, ईसाई, जैसी, हिन्दू इनको तीर्थ यात्रा पर दो आँखों से शासक देखते हैं। अस्तु पाठक बचे इन वोट बैंक के प्रचार से, वह तो कुर्सी पर फिदा हैं। उन्हें देश की रक्षा की क्या जरूरत है। रिश्वतखोरी से धन का शोषण, दुरूपयोग हो रहा है। अनुशासन में कमी है देश का धन नेता शादियों में बोतलों में भरकर लुटाते हैं। क्या कोई जानता है यह धन देश को गरीब पतन कर रहा है। यहां राजेन्द्र बाबू, खिदवई लाल बहादूर शास्त्री जैसे मंत्री कब उत्पन्न होंगे जो धन फूंक–फूंककर खर्च करते थे। क्या कोई नेता यह स्वीकार करता है कि मैं शादी में कुछ सिक्कों से विवाह रचाऊंगा। जब पूछा तो कहते हैं कि यह हमारी व्यक्ति सामाजिक स्वतंत्रता है।

जनता सब जानती है कि जब समय आयेगा कि उनका गलत करने पर धकेलकर परे हटा देंगे वह भी जानती है कि कौन दागी है और किस–किसके साथ मिलकर साजिश की। आतंक बचे और यहां हर जगह गरीबी अशांति का शाप दूर हो तभी देशभक्त कहे जा सकते हैं। भारत के गरीबी को पहचानो जो देश के हितैषी हैं। देश की गरीबी और बेरोजगारी को मिटाने के सच्चे राही हैं। याद रखो आप ये अगले चुनावों में उन नेताओं को चुनो जो पैसा न लेकर समर्थन मांगें। उन्हें न चुनो जो गैर कानूनी काम करके विदेशों में प्रमाण पत्र देकर व्यक्ति को पकड़ाते हैं। उन्हें वोट मत दो जो देश में धर्म की समस्या लेकर अयोध्या रामसेतु और अन्य धार्मिक धारणाओं को लेकर व्यर्थ चर्चा करते रहते हैं। परन्तु वोट उनको दो जो ईमानदार और मेहनती और देश की हर समस्या को सुलझाने में अग्रसर रहते हैं। अतएव हम एकता के बल से सच्चे नागरिक बनकर देश को समृद्धि बनाकर सब जगह फैलाएँ ताकि पड़ोसी देश और हमारे देश की ओर बुरी दृष्टि न उठा सकें। आज पुनः देश को महर्षि दयानन्द का वह कथन स्मरण आता है कि राजा और प्रजा अपने कर्तव्यों का किस प्रकार पालन करें।

यज्ञ मानव, समाज व देश हितकारी श्रेष्ठतम कर्म होने से सबके लिये करणीय है

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य को स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए शुद्ध वायु, जल, अन्न, औषधि तथा पर्यावरण की आवश्यकता है। इस कार्य को पूरा करने के लिए सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर ने व उसके बाद वैदिक ऋषियों ने मनुष्यों द्वारा यज्ञ एक अत्यन्त सरल कार्य है जिस पर साधन व समय अल्प लगता है तथा लाभ जीवन भर व मरने के बाद भी मिलता जाता है। यज्ञ करना शुभ व श्रेष्ठतम् कर्म है और मनुष्य जीवन को सुखों से भरपूर करने का एक सरल व सफल साधन है। यज्ञ देवपूजा, संगतिकरण एवं दान को भी कहते हैं। अग्निहोत्र में भी यह तीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यज्ञ करने से याज्ञिक परिवार को सुख व शान्ति का अनुभव होता है। वायुमण्डल के सुगन्धित होने से मन में प्रसन्नता एवं उत्साह की अनुभूति एवं सन्तुष्टि का भाव बनता है। यज्ञ में जिन मन्त्रों का पाठ होता है उसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना भी सम्मिलित होती है। कुछ लोग बिना कोई शुभ काम किये ही ईश्वर से अनेक पदार्थों को मांगते हैं। हमारे मूर्तिपूजक भाई भी ऐसा करते हैं। यज्ञ की प्रार्थना इससे भिन्न ऐसी प्रार्थना है जिसमें की हम वायु को सुगन्धित एवं दुर्गन्ध मुक्त करने के साथ उसके माध्यम से आकाशस्थ वर्षा जल की शुद्धि करते हैं जिससे वर्षा होने पर हमारे अन्न, औषधियां तथा वनस्पतियों को लाभ होता है। सृष्टि के सहस्रो प्राणियों को यज्ञ से लाभ होता है। यही कारण हैं कि सृष्टि के आरम्भ से महर्षि दयानन्द तक जितने भी ऋषि, विद्वान व मनीषी हुए हैं सबने यज्ञ का गौरवगान किया है। हम भी यदि प्रतिदिन यज्ञ करते हैं तो निश्चय ही हमें वर्तमान जीवन सहित परजन्म में भी इससे लाभ होगा।

हम संसार में अनेक मत–तमान्तरों को देखते हैं। इन मत–मतान्तरों का ध्यान कभी इस बात पर नहीं गया कि उन्हें वायु व जल की शुद्धि करनी चाहिए। आज प्रदुषण अत्यधिक बढ़ जाने पर विज्ञानकर्मी एवं न्यायालय पर्यावरण की रक्षा की बात कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि मनुष्य अल्पज्ञ है और वह अनेक बातों का विचार नहीं कर सकता। यदि वैदिक धर्मियों को परमात्मा ने वेदों का ज्ञान न दिया होता तो हमारा अनुमान है कि हमारे देश के मनीषयों का ध्यान भी यज्ञ की ओर न जाता। वेदों में ईश्वर द्वारा यज्ञ करने का उल्लेख व आज्ञा होने के कारण ही वैदिक धर्मियों में यज्ञ की परम्परा का आरम्भ हुआ। ईश्वर, जीव व प्रकृति विषयक त्रैतावाद का सत्य सिद्धान्त भी वेदों की ही देन है। ईश्वर ने ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा हमें अपने स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव का सृष्टि के आरम्भ में परिचय कराया था। जीवात्मा का जो स्वरूप हमें उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति व ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में मिलता है वह भी वेदों के ज्ञान के अनुसार ही हमारे मनीषियों ने प्रस्तुत किया है। यज्ञ में आचमन व इन्द्रिय स्पर्श के मन्त्र बोलकर शरीर के निरोग व बलवान रहने की प्रार्थना की जाती है। इसके बाद स्तुति, प्रार्थना, उपासना के आठ मन्त्रों में ऐसी महनीय स्तुति व प्रार्थनायें हैं? इस दृष्टि से आर्यसमाज के वैदिक धर्मी लोग भाग्यशाली हैं जिन्हें प्रतिदिन प्रातः व सायं इन मन्त्रों से स्तुति व प्रार्थना, उपासना करने का अवसर प्राप्त होता है। स्तुति, प्रार्थना, उपासना के आठ मन्त्रों के बाद स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मन्त्रों से भी ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना की जाती है। यहां भी ईश्वर से अनेक उत्तम पदार्थों की याचना की जाती है। इसके बाद दैनिक व विशेष यज्ञ किया जाता है। सभी मन्त्रों का अपना महत्व है। विशेष यज्ञ करते हुए हम प्रथम समिदान में व पांच घृताहुतियों में एक ही मन्त्र का उच्चारण करते हैं। इस मन्त्र को लिखकर हम इसका अर्थ दे रहे हैं। इस मन्त्र में ईश्वर से जो प्रार्थना की गई है, वह हमें अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। इसके बाद हम स्विश्टकृदाहुति मन्त्र के अर्थ को भी प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठकों से हम इनके भावों पर ध्यान देने का अनुरोध करते हैं।

पंच घृताहुति का मन्त्रः ओ३म् अयन्त आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मचर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम।। इसका अर्थ है, हे सब पदार्थों में विद्यमान परमे वर! मरा आत्मा तुझ परमे वर के लिये इस यज्ञ में समिधा के समान है। इस यज्ञ के द्वारा तू मुझमें प्रकाशित हो, अवश्य बढ़े और हमको भी बढ़ाये। हमें पुत्र–पौत्र, सेवक आदि अच्छी प्रजा से, गौ आदि पशुओं से, वेद–विद्या के तेज से और धन–धान्य, घृत दुग्ध, अन्न आदि से समृद्ध कर। यह सुन्दर आहुति सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिये हैं, यह मेरे लिए नहीं है।

स्विष्टकृदाहुति मन्त्रः ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विश्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विश्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते, इदन्न मम।। इस मन्त्र का अर्थः इस यज्ञ कर्म में मैंने जो कुछ विधि से अधिक किया है अथवा जो कुछ भी विधि से न्यून किया है। शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाला परमात्मदेव सब शुभ इच्छाओं को जानता है, वह मेरी सभी इच्छाओं को पूर्ण कर देवे। शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाले, यज्ञ को सफल बनाने, सब प्रयश्चित्तरूप दी गई आहुतियों एवं कमानाओं को पूर्ण करनेवाले परमेश्वर के लिए यह आहुति है। वह परमात्मा हमारी सब कामनाओं को पूर्ण करे तथा श्रद्धा से किया गया मेरा यज्ञकर्म उनकी कृपा से सदा सफल हो। यह आहुति कामना पूर्ण करने वाले जगदीश्वर के लिए सादर समर्पित है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।

यज्ञ के द्वारा एक ओर हम वायु, जल, मन, आत्मा आदि की शुद्धि करते हैं, अपने शरीर को स्वस्थ रखने की चेष्टा करते हैं वहीं मन्त्रों में जो श्रेष्ठतम विचार व प्रार्थनायें हैं, उसको बोलकर हम भीतर व बाहर विद्यमान सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमेश्वर से इहलोक व पारलौकिक सुख की कामना करते हैं। यज्ञ को ऋषियों ने श्रेष्ठतम कर्म कहा है और वस्तुतः यह है भी। हम यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि यज्ञ में ईश्वर से जो प्रार्थनायें की जाती हैं वह पूर्ण होती है बशर्ते की हममें ईश्वर से उन्हें प्राप्त करने की पात्रता हो। यह भी ध्यातव्य है कि हमारे पास अपना शरीर आदि जो कुछ भी है वह सब हमारा नहीं है अपितु हमें परमात्मा से निःशुल्क मिला है। यह भी निवेदन करना है कि यज्ञ करने से निर्धनता दूर होने सहित मनुष्य की सभी शुभ कामनायें पूर्ण होती हैं। अतः सबको यज्ञ करना चाहिये।

आजकल हम आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं में वाषिकोत्सव आदि अनेक अवसरों पर बहुकुण्डीय यज्ञों का प्रचलन देखते हैं। हमसे हमारे एक ऋषिभक्त मित्र ने पूछा है कि क्या ऋषि ने बहुकुण्डीय यज्ञ का कहीं विधान व उल्लेख किया है? जहां तक हमारी जानकारी है ऋषि ने ऐसा नहीं किया है। उन्हें सम्भवतः इसकी आवश्यकता नहीं हुई। आर्य समाज के उत्सवों में अधिक लोगों के आने पर सब यज्ञ में आहुतियां दे सकें और इसके बाद वह यज्ञ को अपने जीवन का स्थाई अंग बनायें, यही भावना बहुकुण्डीय यज्ञों के पीछे प्रतीत होती है। अनेक कुण्डों, तीन से पांच में यदि यज्ञ किया जाता है तो वह शोभायमान होता है। लोग भक्तिभाव से यजमान बनते हैं और श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुतियां देते हैं। वैदिक काल में सभीलोग अपने घरों पर यज्ञ करते थे जिससे देश का वायु व जल शुद्ध होने से देशवासी रोगों से मुक्त रहते थे। ऋषि ने भी लिखा है कि यदि वर्तमान में सर्वत्र यज्ञ होने लगे तो देश पहले की तरह रोगों से मुक्त व सुख–समृद्धि आदि से युक्त हो जाये। बहुकुण्डीय यज्ञ करने में हमें कोई दोष दृष्टिगोचर नहीं होता यदि आयोजक इसे धर्म प्रचार की भावना से करते हैं। इसके पीछे आयोजकों का किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं होना चाहिये। बहुकुण्डीय यज्ञ में विहित गोघृत, वनस्पति, औषधियों, मिष्ठ, पोशक एवं सुगन्धित पदार्थों से जितनी अधिक आहुतियां दी जायेंगी उतना ही वातावरण पुष्ट व शुद्ध होगा। हमने इसी माह वैदिक साधन आश्रम तपोवन तथा आर्यसमाज लक्ष्मण चौक में बहुकुण्डीय यज्ञ देखे हैं। यहां अधिकतम् चार या पांच यज्ञ कुण्डों में यज्ञ किया गया। सब यज्ञ करने वाले यजमानों में पूर्ण श्रद्धाभाव देखा गया। यहां यजमान बनने का किसी से कोई शुल्क भी नहीं लिया जाता। अतः हमें इसमें किसी प्रकार का कोई दोष दृष्टिगोचर नहीं होता। यज्ञ के नाम से यदि कोई कहीं दुकानदारी चलाता है तो वह नहीं होना चाहिये।

यज्ञ को देवयज्ञ कहा जाता है। इसमें चेतन एवं जड़ देवों की पूजा व सत्कार होता है। अग्नि में गोघृत व यज्ञ सामग्री की आहुति से वायु, जल, अन्न, औषधियों की पवित्रता होती है। घर का वायुमण्डल सुगन्धित होकर मन व आत्मा को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने के साथ परिवारजनों को रोगों से दूर रखता है। भोपाल जैसी गैस त्रासदी होने पर भी याज्ञिक परिवार की रक्षा देखी गई है। यज्ञ से यज्ञकर्ता रक्षित होते हैं। ईश्वर का सहाय व आशीर्वाद मिलता है। यज्ञ से प्राणीमात्र को सुख का लाभ होता है। इस कारण से यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म है और हम सबको इसका नित्य प्रति अवश्यक सेवन करना चाहिये। ओ३म् शम्।

स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार है

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, आर्य समाज कलकत्ता

पुरी के शंकराचार्य श्री स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती ने कलकत्ता में एक महिला को वेदपाठ करने से रोक दिया। यह बड़ा अशोभनीय आत्मघाती कार्य था। कलकत्ता में इससे उग्र चर्चा उठ खड़ी हुई। महिलाओं का वेदाधिकार तो आर्यसमाज का सीधा मोर्चा है। हमने आर्य समाज की ओर से प्रेस कान्फ्रेन्स की। अच्छी संख्या में प्रेस वाले आर्य समाज में आये और हमारी विज्ञप्ति का अच्छा स्वागत हुआ। उ०प्र० गुजरात आदि प्रान्तों से भी हमारे चैलेन्ज के प्रकाशन के समाचार आये हैं। हम अपनी विज्ञप्ति का अविकल छाप रहे हैं। –सम्पादक

पुरी के शंकराचार्य श्री स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती ने कलकत्ता इन्स्टीट्यूट हॉल में रविवार १६ जनवरी १९९४ को शारदेश्वरी आश्रम के पुरोगम में श्रीमती अरून्धती राय चौधरी को वेद मन्त्र पढ़ने से मना कर दिया। स्वाभाविक है कि इससे प्रबुद्ध उदार वर्ग में और विशेषरूप से महिलाओं में क्षोभ उत्पन्न हुआ। श्री स्वामी निश्चलानन्द जी का मत है कि वेदों में स्त्रियों को वेद पढ़ने का निषेध किया गया है। यह भी समाचार छपा है कि प्रसिद्ध वैदिक विदुषी श्रीमती सुकुमारी भट्टाचार्या ने यह स्वीकार किया कि वेदों में स्त्रियों के वेदाधिकार का निषेध है। अतः सुकुमारी जी ने यह भी कहा कि वेद का २०वीं शताब्दी में इतना क्या औचित्य है कि उसका प्रत्येक शब्द स्वीकार किया जाय। स्वामी निश्चलानन्द जी शंकराचार्य ने यह भी कहा कि स्त्रियों का उपनयन संस्कार नहीं होता अतः उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है।

प्रमाण–हीन–वक्तव्य– स्वामी शंकराचार्य जी ने या श्रीमती सुकुमारी भट्टाचार्य जी ने यह नहीं बताया किस वेद में स्त्रियों के वेदाधिकार का निषेध कहाँ है। हम बड़े आदर के साथ नम्रतापूर्वक इन धर्माचार्यों और विद्वानों की सेवा में श्रद्धापूर्वक निवेदन करना चाहते है कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इन चारों संहिताओं में कहीं एक भी मन्त्र या मन्त्रांश ऐसा नहीं है जो स्त्रियों के वेद पढ़ने का निषेध करता हो। हम बड़ी नम्रता से, किन्तु सत्य की रक्षा के लिए अत्यन्त सबल शब्दों में बड़ी दृढ़ता से यह कहना चाहते हैं, कि चारों वेदों में कहीं भी स्त्रियों के वेदाधिकार का निषेध हमें नहीं मिला है। हमने आर्यसमाज के और अन्य व्यक्तिगत परिवारों के वेद पारायण महायज्ञों के प्रसंग में कई बार चारों वेदों का पारायण पाठ किया है। आज तक शताधिक वेद पारायण यज्ञों में पाठ करता रहा हूँ। बीस सहस्त्र से भी अधिक संहिता मन्त्रों में कही भी स्त्रियों के वेदाधिकार के निषेध की गन्ध भी नहीं है। मैं व्यक्तिगत रूप से अपने अध्ययन और पाठ के आधार पर यह तथ्य सत्यापित कर रहा हूँ।

''सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः''

ऋ० ७।८।१२।२।।

वेद भगवान की सत्यउक्ति हमारी सब प्रकार रक्षा करें।

मानवमात्र को वेदाधिकार– मध्यकाल में जब बहुत प्रकार के अनार्ष मिथ्या और साम्प्रदायिक मतवाद प्रचलित होने लगे तो कर्मकाण्ड के अनार्ष ग्रन्थों में 'न स्त्री शूद्रौ, वेदमधीयाताम।' और 'स्त्री शूद्र द्विज बन्धूनामन्त्रयी न श्रुति गोचरा' जैसी उक्तियाँ और विधान प्रचलित हुये। यह भारतीय संस्कृति और वैदिक परम्परा का अन्धकारपूर्ण युग था। वेद मनुष्य मात्र के लिए है। वेद परमेश्वर की वाणी हैं। जैसे पृथ्वी, जल, वायु, सूर्य, आकाश परमेश्वर निर्मित है और मनुष्यमात्र के लिए हैं, उसी प्रकार वेद भी परमेश्वर की वाणी होने के कारण मनुष्यमात्र के लिए हैं। प्रसिद्ध वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद के २६वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का प्रमाण देकर कहा–

''यथेमां वाचं कल्याणीमवदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।''

अर्थात– परमेश्वर उपदेश करते हैं कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिये इस कल्याणी वेदवाणी का उपदेश करता हूँ वैसे सब मनुष्य किया करें। इसमें प्रजनेभ्यः शब्द तो है ही वैश्य, शूद्र और अति शूद्र आदि की गणना भी आ गई है। यह बड़ा सुस्पष्ट प्रमाण है। वेद के विद्वानों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस अद्भुत प्रमाण का हृदय खोलकर देश और विदेश में स्वागत किया। उस अन्धकार के प्रसिद्ध वेद विद्वान श्री सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने अति सम्मानित ग्रन्थ ''ऐतरेयालोचन'' में लिखा है कि स्वामी दयानन्द ने मनुष्य मात्र के वेदाधिकार में साक्षात वेदमन्त्र का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है।

विश्व विख्यात विचारक, और समालोचक रोमा लोलाँ ने स्वामी दयानन्द को यह कहकर श्रद्धांजलि दी है कि सचमुच वह दिन भारत के लिए एक नव युग के निर्माण का दिन था जब स्वामी दयानन्द ने एक ब्राह्मण संन्यासी होकर भी सैकड़ों वर्षों से ताला में बन्द वेदों को मनुष्य मात्र के पढ़ने के अधिकार का प्रतिपादन किया।

स्वामी दयानन्द जी ने तो आर्य समाज के नियमों में एक नियम ही बना दिया कि वेद का पढ़ना पढ़ाना परम धर्म है। आज स्वामी निश्चलानन्द जी जो भी कहें कहने में स्वतंत्र है किन्तु आज के दिन दर्जनों कन्या गुरूकुलों में हजारों छात्रायें वेद पढ़ रही हैं और सैकड़ों वेद विद्या की गम्भीर विदुषियाँ, आचार्याएँ वेद पढ़ा रही हैं।

प्राचीन काल में वेद विदुषी महिलाएँ– ऋषि मन्त्रद्रष्टा होते हैं, ऋषिकायें भी मन्त्रद्रष्टा होती हैं। लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि कई इतिहास प्रसिद्ध ऋषिकायें हैं। सोलह ऋषिकाएं ऋग्वेद में हैं।

संस्कारों में स्त्रियाँ मन्त्र पाठ करती थी ''इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्'' ऐसा कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में निर्देश है अतः स्त्री का मन्त्र पाठ स्वतः सिद्ध है।

कन्याओं का उपनयन– कन्याओं का भी उपनयन होता था और आज भी बहुत सारे वैदिक परिवारों में कन्याओं का उपनयन होता है और स्त्रियाँ यज्ञोपवीत पहनती हैं। सन्ध्या अग्नि होत्र करती हैं वेदपाठ भी करती हैं। निर्णय सिन्धु तृतीय परिच्छेद में लिखा है–

''पुराकल्पे तु नारीणा नैञ्जीबन्धनमिष्यते।
अध्ययनं च वेदानां भिक्षाचर्यं तथैव च।''

इसमें यज्ञोपवीत और वेदों का अध्ययन दोनों का विधान है। शंकराचार्य निश्चलानन्द सरस्वती जी कैसे विरोध करते हैं यह वहीं जाने। हारीत संहिता में दो प्रकार की स्त्रियों का उल्लेख हैं– १. ब्रह्मवादिनी २. सद्योवधू।

ब्रह्मवादिनी– तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनं अग्निबधनं वेदाध्ययनं स्वगृहे भिक्षा इति।

पराशर संहिता के अनुसार ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का उपनयन होता है, वे अग्निहोत्र करती हैं, वेदाध्ययन करती हैं और अपने परिवार में भिक्षावृत्ति करती हैं।

सद्योबधू–'सद्योबधूनां तू उपस्थिते विवाहे कथंचित् उपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः।' –सद्योवधू वे स्त्रियाँ हैं जिनका विवाह के सयम उपनयन करके विवाह कर दिया जाता है। जैसा आजकल पुरुषों के विवाह में कई जगह होता है।

वेद में उपनीता स्त्री–ऋग्वेद के मण्डल १० सूक्त १०९ मन्त्र ४ में लिखा है– ''भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता'' यहाँ उपनीता जाया बहुत सुस्पष्ट है।

आचार्या और उपाध्याया वे स्त्रियाँ है, जो स्वयं पढ़ाती हैं नहीं तो आचार्य की स्त्री आचार्यानी और उपाध्याय की स्त्री उपाध्यायानी कहलाती हैं।

शंकर दिग्विजय में मण्डन मिश्र की पत्नी भारती देवी के विषय में लिखा है–

**'शास्त्राणि सर्वाणि षड्वेदान् काव्यादिकान्
वेत्ति यदत्र सर्वम्।'**

इसमें भारती देवी के षडङ्गवेदाध्ययन की बात सुस्पष्ट है।

कौशल्या का अग्निहोत्र– अग्निहोत्र में वेदमन्त्र बोले जाते हैं और कौशल्या अग्निहोत्र करती थी बाल्मीकि रामायाण में अयोध्या काण्ड अः २०–१५ श्लोक में द्रष्टव्य है–

**साक्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रतपरायणा।
अग्नि जहोतिस्म तदा मन्त्रवत्कृतमञ्जला।।**

कौशल्या रेशमी वस्त्र पहने हुए व्रत पारायण होकर प्रसन्न मुद्रा में मन्त्र पूर्वक अग्निहोत्र कर रहीं थी। इसी प्रकार अयोध्या काण्ड आ० २५ श्लोक ४६ में कौशल्या के यथाविधि स्वतिवाचन का भी वर्णन है।

सीता की सन्ध्या– लंका में हनुमान सीता को खोजते हुए अशोक वाटिका में गये किन्तु उन्हें सीता न मिलीं। हनुमान ने वहाँ एक पवित्र जल वाली नदी को देखा। हनुमान को निश्य था कि यदि सीता यहाँ होगी तो सन्ध्या समय आ गया है और सीता यहाँ सन्ध्या करने के लिये अवश्य आयेंगी। सुन्दरकाण्ड अ० १४, श्लोक ४१ में लिखा है–

सन्ध्याकालमनाः श्यामाध्रवमेष्यति जानकी।
नदीं चेमां शुभजलां सन्ध्यार्थ वरवर्णिनी।।

अर्थात् वर वर्णिनी सीता इस शुभ जल वाली नदी पर सन्ध्या करने के लिए निमित्त अवश्य आयेंगी।

इस छोटे से प्रयास में हमने साक्षात् वेद वचन उद्धृत करके यह प्रमाण दे दिया है कि वेद मनुष्य मात्र के लिये हैं और 'धर्मजिज्ञासमानानां प्रणाणं परमं श्रुतिः' धर्म के लिये वेद परम प्रमाण हैं। किसी वेद संहिता में या वैदिक ऋषि कृत ग्रन्थ में स्त्रियों के वेद पढ़ने का निषेध नहीं है। वेदों की लोपामुद्रा, गार्गी, भारती आदि स्त्रियाँ विदुषी थीं और वेद पढ़ी थीं। आज भी वेद पढ़ती हैं।

आर्य समाज का आह्वाहन– आर्य समाज सदा शास्त्र विचार के लिये श्रद्धा और आदर पूर्वक प्रस्तुत है। हम विदुषी वेद की आचार्या स्त्रियों को ही शास्त्रों के प्रमाणों से यह सिद्ध कर देने को प्रस्तुत हैं कि पुरुषों के समान ही स्त्रियों को भी वेदाधिकार है।

हम बड़े आदर और प्रेम से जगतगुरू स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती पुरी से स्त्रियों के वेदपाठ के अनाधिकार के लिये प्रस्तुत करें। हम और वेद भक्त नारियां उनको प्रमाण देने के लिए आह्वान करते हैं।

सत्यमेव जयते ना नृतम्।

संस्थापित–1885 ओ३म् फोन नं0–0522–2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द–194 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ
का
135–वाँ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

पत्रांक–537 / वार्षिक बृहद् अधिवेशन / लखनऊ: दिनांक–20 दिसम्बर, 2018

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, उप प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 20 जनवरी, 2019 दिन रविवार (पौष शुक्ल चर्तुदशी) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान / का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, (नारायण स्वामी भवन) 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ परिसर में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
4– कार्यवाहक प्रधान व सभा मन्त्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
5– वार्षिक वृत्तांत 1 अप्रैल, 2017 से 31 मार्च,2018 तक पर विचार व स्वीकारार्थ।
6– 01 अप्रैल, 2018 से 31 दिसम्बर, 2018 तक आय–व्यय स्वीकारार्थ।
7– आगामी वर्ष 2019–2020 का अनुमानित बजट (आय–व्यय) स्वीकारार्थ।
8– आय–व्यय लेखा परीक्षक की नियुक्ति पर विचार।
9– प्रधान / का0 प्रधान अथवा अन्तरंग सभा को भेजे गए विषय / प्रस्ताव पर विचार।
10– अन्य विषय प्रधान / का0 प्रधान जी की अनुमति से।
11– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192

ओ३म्

हरिः पवित्रे अर्षति।
(ऋग्वेद-मण्डल-9, सूक्त-3, मंत्र-9)
दुःखों को हरने वाला परमात्मा पवित्र हृदय में प्रगट होता है, इसलिए पवित्र विचार ही रखने चाहिए।

108 कुण्डीय देवयज्ञ सत्संग समन्वित
पावन वेद कथा

दिनांक 18, 19 एवं 20 जनवरी, 2019 (दिन-शुक्र, शनि व रविवार)
पौष, शुक्ल, द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी सम्वत् 2075
सृष्टि सम्वत् 1960853119

यज्ञो वै विष्णुः।
यज्ञ ही व्यापक होने के कारण साक्षात् विष्णु है।

स्थान
आर्ष गुरूकुलम् विद्यामन्दिर, गुरूकुल नगरम् निकट-रसूलपुर कायस्थ, शुक्ला चौराहा, जानकीपुरम्, लखनऊ

आयोजक
सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, एवं
जिला वेद प्रचार संगठन लखनऊ
(रजि0 338/2009)
सम्पर्क सूत्र-8318397238, 9161053864, 9839950121, 9415610502

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

२५ दिसम्बर– जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस गुरूकुल पूठ के संस्थापक स्वमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री के जन्म दिवस के साथ ही उत्साह पूर्वक मनाया सर्व प्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ यजमान श्री विनय आर्य संयोजक, आर्य समाज अमरोहा रहे। उनके पूज्य पिता स्व० सत्यप्रकाश जी आर्य जी के १०१ वें जन्म दिवस पर उन्हें स्मरण किया गया और श्रद्धांजलि समर्पित की गई कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विकास आर्य जिलाध्यक्ष भाजपा हापुड़ एवं श्रीमती अमृता कुमार जी अध्यक्ष जिलापंचायत हापुड़ मुख्य अतिथि रही वि० अतिथि श्री ज्ञानेन्द्र गांधी मुराबाद, शोदानसिंह मेरठ, चौ० सतवीर सिंह भा०कि०यू० राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जिला सभा अमरोहा के मन्त्री ठाकुर पाल सिंह पूर्व अध्यक्ष ओमपाल सिंह, राजनाथ गोयल अ०स०उ०प्र०, हेतराम सागर अमरोहा वक्ताओं में मुख्य रूप से प्रमोद आचार्य, महेश आर्य, सुभाष प्रधान, प्रो० हरेन्द्र सिंह, कुशल पाल आर्य, स्वामी अखिलानन्द जी, बाबू सुरेन्द्र सिंह अध्यक्ष जिला सभा हापुड़, सुन्दर लाल एवं कृतित्व पर प्रभावशाली प्रकाश डाला म० जगमाल सिंह, म० निरंजन सिंह आर्य के भजन हुए कार्यक्रम में श्री अमर पाल आर्य, ब्रह्मा हरिसिंह आर्य, सूबेदार रिसाल सिंह, मा० रणजीत सिंह रामकुार शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, दिनेश शास्त्री, कुलदीप आचार्य, अशोक त्यागी, अनिल कुमार आर्य गढ़, डॉ० धर्मवीर सिंह आर्य, बु० शहर हापुड़, अमरोहा, पिलखुवा से बसे भरकर आई थीं प्राचार्य राजीव कुमार जी ने सभी का आभार व्यक्त किया शौदान सिंह जी ने सभी का धन्यवाद दिया कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

–अधिष्ठाता वेद प्रचार, वीरेन्द्र सिंह आर्य, हापुड़

शोक संवेदना

आर्य समाज अयाद नगर हापुड़ के मन्त्री श्री प्रतिपाल सिंह आर्य के परिवार में एक कार दुर्घना में ३ युवक जो तीनों भाई थे निधन हो गया चाचा–ताऊ के क्रम में प्रतिपाल सिंह के बड़े भाई के पुत्र थे पूरे क्षेत्र में शोक का वातावरण बन गया जिला सभा के प्रधान सुरेन्द्र सिंह आर्य एवं सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी अखिलानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर आर्य समाज की ओर से शोक संवेदना व्यक्त कर धैर्य की प्रार्थना की सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी ने भी अपनी शोक संवेदना प्रेषित की है आर्य मित्र परिवार भी आपके साथ है।

प्रेरणा दिवस कुलदीप पुनिय, सिम्मभावली

१ दिसम्बर को कुलदीप पूनिया पुत्र धर्मपाल सिंह जमालपुर, सिम्भावली जि० हापुड़ छत्तीसगढ़, में माओवादियों द्वारा शहीद कर दिया गया उसकी शादी ११ दिसम्बर को होनी थी छुट्टी लेकर आना था लेकिन आया तो शहीद होकर ताबूत में सजधज कर आया था पूरा जिला शोकमग्न था डी.एम. एस.डी.एम., विधायक, एस.पी. फौज के सैनिकों ने सलामी देकर शहीद को नमन किया सभा मन्त्री स्वामी जी ने स्मृति यज्ञ कराया तथा क्षेत्र के सभी वर्गों से सभी पार्टियों से भा.कि.यूनियन के उपाध्यक्ष चौ० सत्यवीर सिंह जी ने तथा भूतपूर्व सैनिकों ने उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की तथा सपूत की माता को वीर प्रसवनी बताकर सम्मान किया पिता को सभी ने धैर्य बन्धाया जो राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए शहीद होते हैं वे कभी मरते नहीं वे अमर हो जाते हैं ऐसे ही अमर हो गया कुलदीप पूनिया और उसकी जन्मभूमि भारत माता–

गुरूकुल पूठ में शोक सभा

आर्य जगत् के प्रमाणिक विद्वान् एवं लेखक गुरूकुल झज्जर के सर्व प्रथम स्नातक एवं मुख्याधिष्ठाता आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक के मालिक आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी का देहावसान हो गया इस समाचार से गुरूकुल पूठ में शोक सभा का आयोजन किया गया शान्ति यज्ञ के पश्चात् स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के प्रथम शिष्यों में थे व्याकरण वेद, शास्त्रों के विद्वान् एवं लेखक थे व्याकरण महाभाष्य की टीका एवं प्रकाशन आपने ही किया था आप प्रेस पर गुरूकुल की पुस्तकों एवं मासिक सुधारक का प्रकाशन करते थे आपका भरापूरा परिवार है सभी पुत्र योग्य स्नातक हैं। गुरूकुल परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

–प्रदीप शास्त्री गुरूकुल पूठ

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

कार्यक्रम की झलकियाँ

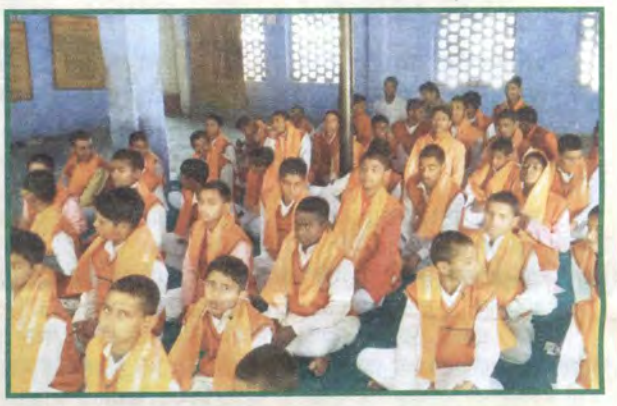

गुरूकुल महाविद्यालय पुष्पावती पूठ गढ़मुक्तेश्वर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आर्य महानुभावों का सम्मान करते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती व अन्य आर्यजन

आवश्यक निर्देश

आर्य संस्थाओं एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक / प्रशानाचार्य एवं पदाधिकारियों को सूचित करते हुए निर्देशित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ एवं प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ0प्र0 तथा आर्य वीर दल की ओर से माह जुलाई–2019 में महर्षि दयानन्द सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसकी सूचना आप सभी को समय से उपलब्ध करा दी जाएगी तथा आवश्यक बुकलेट एवं प्रश्न पत्र भी समय से भेज दिये जायेंगे।

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के संज्ञान में आया है, कि आर्य समाज एवं आर्य वीर दल के तथाकथित एवं अनाधिकृत पदाधिकारियों (पंकज आर्य–अलीगढ़ व अन्यों) द्वारा शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों / प्रधानाचार्यों को गुमराह करके **महर्षि दयानन्द सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता** का अयोजन किया जा रहा है तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विवश किया जा रहा है धन का दोहन किया जा रहा है ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहें और ऐसी किसी भी प्रतियोगिता में भाग न लें। अनुपालन सुनिश्चित किया जाये।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)	(डॉ0 धीरज सिंह)	(अरविन्द कुमार)
मन्त्री	प्रधान	प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।	आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।	प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ.प्र.

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है

वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज, नई मण्डी, मुजफ्फर नगर
तारा चन्द्र वैदिक पुत्री पी0जी0 कालेज, नई मण्डी, मुजफ्फर नगर

सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं को जानकर परम हर्ष होगा कि वैदिक पुत्री पाठशाला इ०का० नई मण्डी मु० नगर में पौष शुक्ल पक्ष चतुर्थी, पंचमी एवं षष्ठी सम्वत– २०७५ दिन बृहस्पतिवार, शुक्रवार एवं शनिवार तद्नुसार दिनांक १०, ११ एवं १२ जनवरी २०१६ को अथर्ववेद यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ में आचार्या श्रुति जी जयपुर एवं उनकी सहपाठी सम्मिलित होगी।

अतः आप सभी धर्म प्रेमियों से नम्र निवेदन है कि आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रो सहित पधार कर धर्म लाभ उठायें।

कार्यक्रम स्थल– वैदिक पुत्री पाठशाला इ0का0 नई मण्डी, मुजफ्फर नगर

दिनांक – 10.01.2019 व 11.01.2019

यज्ञ एवं हवन– प्रातः 7.00 बजे से 11.00 बजे तक

यज्ञ हवन तथा प्रवचन भजन– सायं 4.00 बजे से 6.00 बजे तक

दिनांक – 12.01.2019

यज्ञ एवं पूर्णाहुति– प्रातः 7.30 बजे से 11.00 बजे तक

अरविन्द कुमार	मूलचन्द्र	श्रीमती शैली रंजन– प्रधानाचार्या
प्रबन्धक / सचिव	अध्यक्ष	श्रीमती संतोष गोयल– निदेशिका
		कु0 प्रेरणा शर्मा– प्राचार्या

संस्थापित–1885 श्रीमद्दयानन्दाब्द–194 ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम् फोन नं0 0522–2286328 संस्थापित–1885 श्रीमद्दयानन्दाब्द–194

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

135-वाँ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक–19, 20 जनवरी, 2019 तद्नुसार शनिवार एवं रविवार

(तिथि–पौष शुक्ल त्रयोदशी एवं चर्तुदशी) सम्वत्–2075

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण-5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

(डॉ0 धीरज सिंह)
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

(अरविन्द कुमार)
कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।